कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा

सद्गुरु शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से आज्ञा चक्र में गणपति भाव को स्थापित करते है क्योंकि गणपति बुद्धि के स्वामी है और जहां सद्बुद्धि स्थापित होती है वहां सद्विचारों से युक्त साधक सर्वार्थ सिद्धि के सुपथ पर बढ़ता हैं।

गुरु का कार्य है, साधक के जीवन में संशय नहीं हो, उसकी बुद्धि स्थिर हो, एकाग्र भाव हो और अपने कार्यों को पूर्ण करने के लिये निरन्तर प्रयत्न हो।

कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा साधक के बुद्धि तत्व को जाग्रत करने की महान् चेतना क्रिया है।

भगवान श्रीगणपति सभी देवताओं में प्रथम पूज्य, सर्वपूज्य और सिद्धि प्रदायक एवं मंगलदायक देव माने गये है, गणपति भगवान शिव और आदि शक्ति पार्वती का कल्याणकारी स्वरूप है और इनका सम्पूर्ण स्वरूप ही कल्याणकारी एवं विघ्नहर्त्ता है, आदिकाल से शास्त्रों में यह विधान आया है कि जीवन में कैसा भी कार्य हो पहले गणेश स्मरण एवं पूजन आवश्यक है। जिस कार्य को प्रारम्भ में गणपति से मंगल कामना कर कार्य प्रारम्भ होता है, उसमें लक्ष्य सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए कर्म तो सभी करते है किन्तु सब को फल बराबर प्राप्त नहीं होता। उदाहरण के लिए एक मजदूर तपती गर्मी में भरपूर कर्म करता है किन्तु उसके कर्म का उसे उतना फल नहीं मिल पाता जितना दूसरे व्यक्ति को प्राप्त होता है, इसमें भाग्य के साथ-साथ दूसरा पक्ष भी है। जिसे बुद्धि कहा जाता है अर्थात् ज्ञान।

ज्ञान अर्थात् (बुद्धि) के साथ जो कार्य किया जाता है उसमें अवश्य लक्ष्य सिद्धि होकर फल प्राप्त होता है और व्यक्ति को ज्ञान कहां से प्राप्त होगा, ज्ञान का स्वरूप गुरु को कहा गया है और भगवान गणेश बुद्धि प्रदाता कहे गये है अर्थात् ज्ञान के स्वरूप गुरु से कार्य पूर्णता शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से शिष्य जब शक्ति प्राप्त कर गणेश का आह्वान कर कार्य का श्रीगणेश करता है, तो उस कार्य में पूर्णता अवश्य प्राप्त होती है।

साधक शिष्य अपने जीवन काल में कोई भी नवीन कार्य प्रारम्भ करें चाहे नवीन रोजगार हो अथवा भूमि-भवन की खरीद अथवा कोई भी अन्य शुभ कार्य सबसे पहले सद्गुरुदेव से 'कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा' ग्रहण कर कार्य प्रारम्भ करें।

– कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. – 3100/–